नये वर्ष को सफल करने की शुभ कामना - ब्र.कु. गंगाधर

जिनका एक-एक सेकण्ड एक वर्ष के बराबर हो, जिनके पास प्रति पल भाग्य बनाने का अधिकार हो...भक्त जिनका आह्वान कर रहे हों उन्हें ये 2013 का वर्ष कैसे व्यतीत करना चाहिए...जिनके ऊपर सम्पूर्ण विश्व के उद्धार का भार हो, समय जिनका इन्तजार कर रहा हो...महान कर्त्तव्य जिनका आहवान कर रहे हों, उन्हें ये नूतन वर्ष कैसे बिताना चाहिए ताकि महान लक्ष्य प्राप्त हो सके। हमें समय के महत्व को जानकर इसे सफल करना चाहिए। नये वर्ष में क्या करना व क्या नहीं करना चाहिए, कुछ परामर्श प्रस्तुत है।

समय को सफल करें -समय सचमुच ही सर्वश्रेष्ठ खजाना है। हम जानते हैं बच्चे यदि पढ़ाई के समय न पढ़ें तो उनका भविष्य कैसा होगा..। किसान बुवाई के समय यदि फसल न बोये तो उसका क्या हाल होगा। बरसात यदि समय पर न हो या असमय हो तो कैसे दुर्भाग्य को न्यौता देती है। भाग्य बनाने के समय को यदि परचिन्तन में बिता दिया जाए, ईश्वरीय सुख पाने के समय को यदि व्यर्थ बातों में गंवा दिया, प्रभु मिलन के समय को यदि नींद में बिता दिया जाए, प्राप्तियों की बेला को यदि अलबेलेपन में जाने दिया जाए तो हमारा क्या होगा...।

कुछ आत्माओं ने इस महान युग में स्वयं को लौकिक में अति व्यस्त कर दिया है, कुछ लोग व्यर्थ में व्यस्त हैं तो कुछ टी.वी. आदि में। कुछ जिम्मेदारियों में बिजी हैं तो कुछ बिना काम के ही...पुरूषोत्तम संगमयुग पर अति बिजी रहना बुद्धिमानी नहीं है। इस पर आप स्वयं विचार करेंगे।

व्यर्थ में वही मनुष्य रहता है जिसका कोई महान लक्ष्य न हो..व्यर्थ में समय वही व्यक्ति गंवाता है जिसे ईश्वरीय सुख प्राप्त न हुआ हो। हम समय के महत्व को समझें। समय सबके पास है, उसे व्यवस्थित करें और कम से कम दो बार आधा-आधा घण्टा योगाभ्यास में बैठने का समय निश्चित करें।

पुण्य की पूंजी बढ़ाएं -मनुष्य के पुण्य कर्म ही इसके सच्चे मित्र होते हैं। विपदा के समय जब सभी मनुष्य का साथ छोड़ देते हैं तब उसके पुण्य कर्म ही उसे साथ देते हैं। जैसे आपको बैंक में पैसा जमा करने की तीव्र जिज्ञासा रहती है। वैसे ही ईश्वरीय बैंक में पुण्य की पूंजी जमा करें। ये पूंजी जन्म-जन्म काम आयेगी। ये मृत्यु के बाद भी काम आयेगी और इसे कोई बांट भी नहीं सकेगा।

किस-किस तरह जमा करेंगे इस पूंजी को..? ईश्वरीय कार्य में नि:स्वार्थ भाव से सहयोग करके, दूसरों को दुवाएं देकर व मनुष्यात्माओं को सुख व सहयोग देकर। विशेष रूप से याद रखें कि हमें स्वयं को निष्काम भाव में स्थित करना है। क्योंकि स्वार्थ भाव से की गई कोई भी सेवा भविष्य फल नहीं देगी।

स्वयं को स्वमान में स्थित करें -दृढ़ संकल्प कर लें कि कुछ भी हो जाए मुझे अपनी श्रेष्ठ पोजीशन से नीचे नहीं आना है। बातें तो आयेंगी व जाएंगी परन्तु हमारा श्रेष्ठ स्वमान न जाए।

आप सारे दिन में होने वाले कर्मों की एक लिस्ट बना लें। मान लो आपको पांच तरह के कर्म करने हैं। तो हम कर्म से पहले एक विशेष स्वमान निश्चित कर लें और उसे अपनी स्मृति में लाएं। मैं यहां पांच स्वमान लिख रहा हूँ। विभिन्न कर्मों से पूर्व एक-एक का अभ्यास करें। मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं विघ्नविनाशक हूँ, मैं परम पवित्र आत्मा हूँ व मैं पूर्वज आत्मा हूँ।

परिवार में रहते स्मृति में लाएं कि मैं एक महानात्मा हूँ...माया व परिस्थितियों के समय याद करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...विघ्नों पर जीत पाने के लिए मैं विघ्नविनाशक हूँ। भोजन खाने या कुछ भी पीने से पूर्व...मैं परम पवित्र आत्मा हूँ -ये स्मृति में लायें। घर से बाहर जाते हुए यह अभ्यास करना न भूलें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व विघ्न विनाशक हूँ।

स्वमान से क्रोध व अभिमान नष्ट हो जाएगा, सम्मान आपके पीछे परछाई की तरह आयेगा, चित्त शान्त रहेगा व संस्कार बदल जाएंगे। स्वमान आपके विचारों को महान करेगा व जीवन में नया आनंद आ जाएगा। याद रखेंगे -जो बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहते हैं उनके पास विघ्न व समस्याएं आ नहीं सकतीं।

जीवन को प्रतिदिन उमंगों से भरें -प्रतिदिन सबेरे ही स्वयं में उमंग दिलाने वाले संकल्प लाओ। क्योंकि विघ्न, व्यस्तता व माया उमंग कम कर देती है। उमंगों को पुनर्जीवित करने के लिए इस तरह सोचें...

मुझे भगवान से सबकुछ प्राप्त कर लेना है...मुझे इस पढ़ाई में विजयमाला में आना है...मुझे जन्म-जन्म के लिए श्रेष्ठ भाग्य बनाना है...

विचार किया करें...बाबा मुझसे क्या चाहता है...उसने मुझ पर कितनी मेहनत की है..मुझ पर कितने उपकार किये हैं...मुझे उनका रिटर्न देना है..मैं भगवान का आज्ञाकारी बच्चा बनकर दिखाऊंगा।

स्वयं को याद दिलाएं...हे इष्टदेव उठो, तुम्हारे भक्त तुम्हारा

शेष पेज 11 पर...

बाबा की शिक्षा व योग की शक्ति से धारण करें

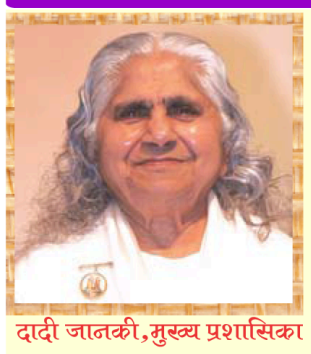

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

संगम पर यह सबसे बड़ा सुख है जो मैं बाबा के नयनों में रहूं, बाबा मेरे नयनों में हो। आखिर में तो हमें घर जाना है। थोड़े समय के लिए यहां हैं। हमें अपना यादगार देकर जाना है। फिर वही यादगार मंदिरों में, शास्त्रों में होगा। अभी हम भगवान के साथ पार्ट बजा रहे हैं, हमारी जीत है ही, गैरंटी है। शिव शक्ति सेना है तो कभी घबराना नहीं है, विजयी बनना है। इसलिए बाबा की शिक्षाओं को योग की शक्ति से धारण करो। अन्तर्मुखी बनो, बाह्यमुखता में नहीं आओ। बाह्यमुखता में आने से बुद्धि भटकती रहती है। अन्तर्मुखी बनो तो व्यर्थ भटकने से छूट जायेंगे।

जो बाबा के बच्चे परमानंद में रहने के इच्छुक हैं उन्हें यही धुन लगी रहती है कि एक ही बाबा को याद करते अपना जीवन धन्य बना लें। हम राजयोगी बेहद के संयासी अपने आपको देखें कि हमारा भविष्य क्या है? विनाश काल है, हमें प्रीत बुद्धि रहना है। मनमनाभव भी रहना है और स्वदर्शन चक्र भी फिराना है। पहले मनमनाभव रहें या स्वदर्शन चक्र फिरायें? मनमनाभव माना एकाग्रचित्त होकर एक बाबा को याद करना है। जब एक बाबा की याद में रहते हैं तो स्वदर्शन चक्र फिराना आसान होता है। स्वदर्शन चक्र फिराते हैं तो 'नथिंग न्यु' लगता है। यह विघ्नों को विनाश करने वा अपनी स्थिति को अचल-अडोल बनाने का अच्छा साधन है। नथिंग न्यु हमको कम बोलने की ट्रेनिंग देता है। इससे हमारा टैम्पर हाई नहीं होगा, नाराज नहीं होंगे, गुस्से भी नहीं होंगे। यह पाठ स्वदर्शन चक्र फिराने में मदद करता है, स्वदर्शन चक्र फिराने से जानते हैं - जो हुआ अच्छा हुआ, जो होगा अच्छा होगा। क्यों, क्या का क्वेश्चन नहीं उठता। क्यों उठाते तो कोई उसका उत्तर नहीं है। अंदर से यही हमारे प्रश्न का उत्तर है जो ड्रामा में हुआ सो ठीक हुआ। ड्रामा की नॉलेज ने हमको निश्चिंत रहना और निश्चित भावी पर अटल रहना सिखाया है। अगर क्वेश्चन को समाप्त करना है, गुलाब का फूल बनना है तो कांटों में रहते हमें न्यारा-प्यारा रहना है, सुगंध फैलानी है, अच्छाई धारण करनी है, मोती चुगना है, दूध और पानी को अलग कर देना है। मिक्स करना बड़ी बात नहीं है। लोभ वश, मोह वश मिक्स कर लेते हैं। परन्तु हंस में इतनी शक्ति होती है जो अपने काम की चीज ले लेता है, काम की नहीं है तो छोड़ देता है। ऐसे जब तक हम हंस मिसल नहीं बने हैं तब तक परखने वा निर्णय करने की शक्ति नहीं आ सकती है।

स्वदर्शन चक्र फिराना हम राजयोगियों के लिए बहुत जरूरी है। हंस वही बनेगा जिसका ज्ञान खजाने से प्यार होगा। ज्ञान हमको अमृत जैसा मीठा लगता है। जितना अमृत पियेंगे शीतल बनते जायेंगे। ज्ञान की वैल्यु का पता चलता जायेगा, ज्ञान हमें कौड़ी से बदलकर हीरे जैसा बनाता है। बाबा ने हम सबके सिर पर ज्ञान का कलश रखा है तो हम अमृत पियें और पिलायें। ऐसे हम रॉयल योगी राजयोगी हैं। हमारे अंदर कितनी खुशी है जो हम परमात्मा को अपना मात-पिता, सखा-स्वामी समझते हैं। साथ-साथ अमृत पीकर हम पावन बनते और पावन बनाने की सेवा भी करते हैं। निश्चय के आधार से विजयी बनते हैं तो यह हमारी अविनाशी जीत हो जाती है। फिर हमसे कोई जीत नहीं सकता, हम भगवान से ऐसा ही राज्य-भाग्य पाते हैं। निश्चय से विकर्म विनाश करते हुए विकर्माजीत बनते हैं। पढ़ाने वाले में इतना निश्चय है जितना भक्ति काल में भगवान में भावना रखते हैं। हमारी भावना भी है और निश्चय भी। पहले जो पढ़ा उस सबको भूल गये, जैसे मरने के बाद इंसान भूल जाता। ऐसे मरजीवा बनें तो सब कुछ भूला। अभी जो बाबा पढ़ाता है उसको अच्छी तरह पढ़कर मुझे प्रालब्ध बनानी है पढ़ाई हमको मायाजीत बनने में मदद करती है, नहीं तो माया आधाकल्प का कड़ा दुश्मनहै। भले कोटों में कोई पढ़ेंगे, ऊंच पद पायेंगे, परंतु हमें ऊंच पद पाना ही है। ऐसे नहीं चलो प्रजा में ही आ जायेंगे। सूर्यवंशी में नहीं तो चंद्रवंशी में ही सही। सब थोड़े ही राजा रानी बनेंगे।

पेपर किसी के द्वारा कभी भी आ सकता है!

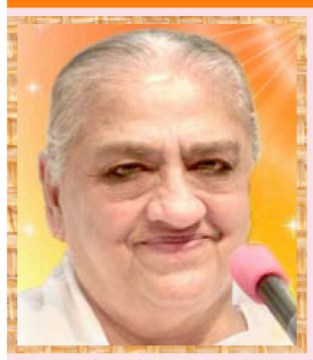

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

मुरली में एक जादू है, है तो सारा जादू लेकिन एक जादू विशेष मुरली में है - जैसे आपके सामने कोई समस्या आई, वैसे तो सारा संसार ही समस्याओं का सागर है और सागर में लहरें नहीं हो तो उसे सागर नहीं, नदी कहेंगे, सागर माना ही लहरें, वह तो होना ही है, तो समस्यायें भिन्न-भिन्न रूप से आती हैं, कभी तन की,कभी मन की, कभी धन की, फिर सम्बन्ध-सम्पर्क में भी कई बातें आती हैं, लौकिक परिवार में भी आती है। लौकिक द्वारा इतनी नहीं आयेगी। मानों किसी ब्राह्मण ने आपको एक शब्द बोल दिया। जो बोलना नहीं चाहिए लेकिन बोल दिया तो आपको एक शब्द बार-बार पिंच करता रहेगा। लौकिक ने आपको दस गालियां भी दे दी तो लगेगा कि ये तो है ही अज्ञानी। अज्ञानी को तो गालियां ही देनी हैं। लेकिन किसी ब्राह्मण ने कुछ बोल दिया तो कहेंगे यह ब्राह्मण ज्ञानी हो करके मेरे को ऐसे कहता है! ऐसी माया सूक्ष्म रूप से दिल दिमाग दोनों में अंदर चली जाती है। तो ऐसी समस्यायें आती है। क्योंकि सम्पूर्ण तो कोई हुआ ही नहीं है। अभी हो रहे हैं। तो किसी के भी द्वारा हमारा पेपर आ सकता है। क्योंकि बाबा ने कह दिया है कि आपके पेपर के लिए कोई पेपर हॉल मुकरर नहीं है। आपको कोई क्वेश्चन की कॉपी पेंसिल नहीं मिलेगी। हमारी ब्राह्मण जीवन ही पेपर हाल है। ब्राह्मण जीवन में ही समस्याओं के क्वेश्चन आते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं कि ये तो समस्यायें आनी ही हैं और जितना-जितना आगे बढ़ेंगे उतने ही क्वेश्चन महीन होते जायेंगे, लेकिन मुरली ऐसी चीज है जो आपको किसी भी प्रकार की समस्यायें आये, चाहे तन का रोग हो, चाहे मन में परेशानी हो, चाहे धन का कुछ नीचे ऊपर हो रहा हो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में कोई भी समस्या हो तो आप मुरली खोलकर उससे उसकी दवाई ले लो, आपको जरूर मिलेगी। चाहे कोई भी मुरली हो, उस मुरली में समस्या का हल मिल जाता है। यह हम लोगों का अनुभव है। यही मुरली में विशेष जादू है जो हमारी हर समस्या को हल करने का साधन एक ही मुरली में मिल जाता है। उस विधि से आप मुरली को पढ़ो। आज मेरे को बाबा ने इसका उत्तर क्या दिया है। हे अर्जुन मैं हूँ। भगवान ने मेरे लिए बोला है। हे अर्जुन माना हे आत्मा, तो मुझ अर्जुन अर्थात् मुझ आत्मा के प्रति बाबा ने क्या महावाक्य उच्चारण किये हैं? तो आप देखेंगे कि बाबा का उत्तर मेरे को मिलेगा। करके देखो। किया भी होगा अनुभवी भी होंगे।

तो मुरली का कितना महत्व है! मुरली तो हमारे साथ होनी ही चाहिए। साकार में बाबा हम लोगों को मुरली के ऊपर बहुत अटेंशन दिलाते थे। मुरली से प्यार नहीं तो मुरलीधर से प्यार कैसे हुआ लेकिन सिर्फ अनुभूति न कर सकने के कारण हम मुरली को बिल्कुल ही साधारण समझ लेते हैं या रिपीट समझते हैं या समझते हैं यह मेरे काम की बात नहीं है। लेकिन सब बातें मेरे काम की हैं। बाबा के हर कर्तव्य से हमारा प्यार है। हम बाबा का चित्र इसीलिए रखते हैं क्योंकि इस चित्र द्वारा ही विचित्र हमको मिला। प्रवेश तो ब्रह्मा बाबा में ही होता है ना तो इसीलिए ब्रह्मा बाबा के चित्र से हमको वो प्रेरणा मिलती है। और ब्रह्मा बाबा का कभी भी हम चित्र देखते हैं तो हमारा अटेंशन ब्रह्मा बाबा के शरीर में नहीं जाता लेकिन ये किसका माध्यम है - उस तरफ हमारी बुद्धि जाती है। कोई दूसरे लोगों की तरह मूर्ति पूजा के रीति से हम ब्रह्मा बाबा का चित्र नहीं रखते हैं। लेकिन ब्रह्मा बाबा का चित्र बाबा के कमरे में इसीलिए रखते हैं कि हमको इस तन द्वारा शिवबाबा की नॉलेज मिली है तो उसकी स्मृति आती है। शिवबाबा ने हमको क्या से क्या बना दिया! तो चित्र हम नहीं देखते लेकिन चित्र द्वारा विचित्र को देखते हैं। बाबा के चित्र के सामने भी कोई क्वेश्चन वा समस्या ले करके जाता है तो उसे उसका उत्तर मिलता है। तो ब्रह्मा बाबा के माध्यम द्वारा शिवबाबा आपको उत्तर देता है। और अनुभव होता है जैसे सचमुच बाबा हमारे से बोल रहा है।